## विचार बिन्दु

**दूसरों पर किए गए व्यंग्य पर हम हँसते हैं पर अपने ऊपर किए गए व्यंग्य पर रोना तक भूल जाते हैं। –रामचंद्र शुक्ल**

# अधिकारी भ्रष्ट क्यों होते हैं?

हाल ही में राजस्थान के एक वरिष्ठ आई ए एस अधिकारी द्वारा स्वयं और अपने परिजनों के नाम पर 40 विला 6.20 करोड़ रुपए में खरीद कर, पुन: उसी कंपनी को 5 लाख रुपए सालाना के किराए पर देने का मामला सामने आया है। यह माना जाता है कि किसी अचल संपत्ति की कीमत पर किराए की आय 3-4 प्रतिशत प्रति वर्ष होती है। इस प्रकरण में यह किराया 30 प्रतिशत है, अर्थात् सामान्य से 10 गुणा अधिक। इस पूरे लेनदेन में भ्रष्टाचार की बू आना स्वाभाविक है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार इन 40 विला की कीमत लगभग 50 करोड़ रुपए है। इस समाचार के प्रमुखता से मीडिया में आने के बाद भ्रष्टाचार पर फिर बहस छिड़ गई है। देश की समस्याओं के मूल में भ्रष्टाचार होने के बावजूद जब भी इस पर चर्चा होती है तो यह कह कर टाल दिया जाता है कि भ्रष्टाचार तो कुएं में भांग पड़ने जैसा है और इस पर बात करना ही व्यर्थ है। यह भ्रष्टाचार के ही कारण है कि करोड़ों के भवन, सड़कें और पुल एक दो बारिश में ध्वस्त हो जाते हैं, विभिन्न विभागों की विकास और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ वांछित वर्ग तक नहीं पहुंच पाता, गरीबों को अस्पतालों में इलाज नहीं मिल पाता, नगर निगम, जे डी ए, परिवहन जैसे विभागों में सामान्य नागरिक का काम रिश्वत दिए बिना नहीं हो सकता, अवैध निर्माण और अतिक्रमण की बाढ़ आ जाती है। देश के नागरिकों की खून पसीने की कमाई से टैक्स के रूप में वसूल किया गया पैसा अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों की जेब में पहुँच जाता है। इसी प्रकार पेपर लीक के कारण अयोग्य व्यक्तियों का उच्च तकनीकी संस्थानों में प्रवेश सरकारी नौकरियों में अयोग्य व्यक्तियों का चयन आदि भी, भ्रष्टाचार का ही परिणाम है ।

जब अधिकांश व्यक्ति भ्रष्ट तरीकों से लाभ कमाते दिखाई देते हैं तो सामान्य नागरिक भी यह धारणा बना लेता है कि किसी को रिश्वत दिए बगैर या बिचौलियों को बड़ी राशि दिए बिना, उसका ना तो किसी परीक्षा में उत्तीर्ण होना संभव है ना ही किसी सरकारी नौकरी के लिए चयन होना संभव है । यह स्थिति एक आम नागरिक के लिए बड़ी दुखदाई होती है।

जब भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खा रहा है तो हम इस ओर से आँख मूंद कर नहीं बैठ सकते। इसी उद्देश्य से यह संपादकीय लिख रहा हूँ। हम इसमें मुख्य रूप से अधिकारियों, विशेषकर उच्च सेवाओं के अधिकारियों के भ्रष्टाचार पर बात करेंगे और यह जानने का प्रयास करेंगे कि ये अधिकारी आखिर भ्रष्ट होते क्यों है?

यह सर्व विदित है कि कुछ दशकों पूर्व की तुलना में सरकारी अधिकारियों के वेतन, प्रत्येक वेतन आयोग के बाद बढ़ते गए हैं। किसी ने सही कहा है कि आवश्यकता सबकी पूरी हो सकती है किंतु लालच किसी का पूरा नहीं हो सकता है। यदि एक लाख रुपए मासिक वेतन वाला अधिकारी 50 लाख रुपए मासिक का जीवन स्तर चाहेगा तो उसे भ्रष्ट होने से कोई नहीं रोक सकता। अधिकारियों का भ्रष्टाचार दो तरह का होता है, एक शोषण करके और दूसरा मिलीभगत का। किसी व्यापारी या ठेकदार या नागरिक को मजबूरी में सरकारी अधिकारी को रिश्वत देनी होती है तो उसकी शिकायत यदाकदा भ्रष्टाचार निरोधक विभाग में हो जाती है किंतु आपसी मिली भगत के भ्रष्टाचार की कोई शिकायत सामान्यतया नहीं होती, क्योंकि इसमें देने वाले और लेने वाले, दोनों का ही हित है। नुकसान केवल सरकारी खजाने को होता है। ये प्रकरण खोजी मीडिया द्वारा सामने लाये जाते हैं। विला खरीदने का प्रकरण इसी श्रेणी में आता है। हम यह कह सकते हैं कि भ्रष्टाचार का मूल कारण लालच है और अपनी आय से कहीं अधिक ऐशो आराम का जीवन जीने की आकांक्षा है। इसमें अधिकारी की पत्नी और परिजनों का प्रोत्साहन भी बड़ी भूमिका निभाता है।

भ्रष्ट अधिकारियों को मिलने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा भी अधिकारियों को भ्रष्ट बनने के लिए प्रेरित करती है। एक समय था, जब ज्ञान और सच्चरित्र को प्रतिष्ठा मिलती थी और भ्रष्ट तथा अनैतिक व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे लोग सामाजिक समारोहों में जाने से भी कतराते थे।

एक और बड़ा कारण जवाबदेही का नितांत अभाव है। आजकल भ्रष्टाचार करना बहुत कम जोखिम वाले और अत्यंत लाभकारी काम की तरह देखा जाता है। जब करोड़ों रुपए डकारने के बाद भी ऐसे अधिकारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही होते हुए नहीं दिखाई देती तो यह अन्य को भी भ्रष्ट बनने के लिए प्रेरित करती है। यदि कोई खोजी पत्रकार यह पता करे कि गत 15 वर्षों में उच्च अधिकारियों के भ्रष्टाचार के जितने मामले सामने आए, उन अधिकारियों की वर्तमान में क्या स्थिति है? उनमें से कितनों को नौकरी से बर्खास्त किया गया, वे जेल गए या उनकी पदोन्नति रुकी। यदि इनकी जानकारी सार्वजनिक की जाय तो पता चलेगा कि इनमें से लगभग सभी पदोन्नत होकर महत्वपूर्ण पदों पर पदस्थापित होते रहे हैं और सम्मानपूर्वक रिटायर होकर मोटी पेंशन ले रहे हैं। आय से अधिक अर्जित संपत्ति किसी की भी जब्त नहीं की गई है और ये अधिकारी पुन: दुगुने उत्साह से अन्य पदों पर भ्रष्टाचार में लिप्त हो गए। कई मामले तो ऐसे भी हैं जहां सरकार ने अदालत में मुकदमा चलाने के लिए अभियोजन की स्वीकृति ही नहीं दी। क्या जिन लोगों ने अभियोजन की स्वीकृति नहीं दी, उन्हें भी भ्रष्टाचार का दोषी नहीं माना जाना चाहिए?

**हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली को यदि भ्रष्टाचार की गंगोत्री या जननी कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। भ्रष्ट अधिकारियों को मिलने वाली सामाजिक प्रतिष्ठा भी अधिकारियों को भ्रष्ट बनने के लिए प्रेरित करती है। एक समय था, जब ज्ञान और सच्चरित्र को प्रतिष्ठा मिलती थी और भ्रष्ट तथा अनैतिक व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। ऐसे लोग सामाजिक समारोहों में जाने से भी कतराते थे।**

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 311(2 बी) में ऐसे कर्मचारियों को सीधे बर्खास्त करने का प्रावधान है जिनके विरुद्ध जांच करना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। इस प्रावधान का उपयोग उन उच्च पदस्थ भ्रष्टतम अधिकारियों के विरुद्ध तो किया ही जाना चाहिए जिनके प्रभाव के कारण निष्पक्ष जांच संभव नहीं है। सरकार को चाहिए कि भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे अकूत संपत्ति अर्जित करने वालों के विरुद्ध इस प्रावधान के अंतर्गत कार्यवाही करे। ऐसी कार्यवाही करने की जानकारी को खूब प्रचारित भी किया जाना चाहिए ताकि भ्रष्ट आचरण करने के पहले वे दस बार सोचें।

वैसे तो किसी भी स्तर के कर्मचारी अधिकारी का भ्रष्टाचार करना गलत है, किंतु उच्च स्तर पर बैठे अधिकारी भ्रष्ट आचरण करते हैं तो उससे अधीनस्थ कर्मचारी भी बेइमानी करने में निश्चिंत होते हैं। उन पर नियंत्रण करने का नैतिक अधिकार भी भ्रष्ट वरिष्ठ अधिकारी खो देते हैं। जब किसी विभाग का मुखिया या सचिव भ्रष्ट होगा तो, वह भला किस नैतिक साहस से अधीनस्थों के भ्रष्टाचार पर कठोर कार्रवाई कर पाएगा?

हमारी वर्तमान चुनाव प्रणाली को यदि भ्रष्टाचार की गंगोत्री या जननी कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। चुनाव आयोग द्वारा किसी भी उम्मीदवार द्वारा जितना खर्च अनुमत किया गया है, उससे कई गुना अधिक राशि उम्मीदवार और दल चुनाव में खर्च करते हैं। यह सर्वज्ञात है कि सांसद के चुनाव पर लगभग 50 करोड़ रुपए खर्च होता है जबकि खर्च की सीमा एक करोड़ भी नहीं है। यह सारा खर्चा काले धन से होता है। जब कोई व्यक्ति करोड़ों रुपए खर्च करके सांसद, विधायक या लाखों खर्च करके प्रधान, जिला प्रमुख या सरपंच बनता है, तो कुर्सी पर बैठते ही उसका पहला काम खर्च किए गए धन को जैसे तैसे वसूल करना होता है।

यह सब को ज्ञात है कि कोई भी मंत्री या जनप्रतिनिधि, अधिकारियों के सक्रिय सहयोग के बिना भ्रष्टाचार नहीं कर सकता है। जब अधिकारीगण, मंत्रियों के भ्रष्ट आचरण में सहयोगी बन जाते हैं तो, यह भ्रष्टाचार की बेल, अमर बेल की तरह पूरे सिस्टम को जकड़ लेती है । जब प्रत्याशियों द्वारा चुनाव अधिक धनराशि खर्च किए बिना लड़ा जाएगा तो फिर जनप्रतिनिधियों को अधिकारियों के माध्यम से खरीद, ठेके या स्थानांतरण आदि के माध्यम से पैसा कमाने की आवश्यकता नहीं होगी।

उपरोक्त विवरण से यह अवधारणा व्याप्त नहीं होनी चाहिए कि सरकार में बैठे सभी उच्च अधिकारी भ्रष्ट हैं। हां, यह अवश्य है कि जब भ्रष्ट अधिकारी सजा नहीं पाते हैं और उन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा, पदोन्नति और महत्वपूर्ण पद मिलते रहते हैं तो फिर अपने दृढ़ संकल्प के कारण जो ईमानदार हैं, केवल वही ईमानदार बने रहेंगे। लेकिन जो असमंजस में हैं, उनके भ्रष्ट होने की संभावना अधिक बन जाएगी । यही कारण है कि कुछ दशकों पूर्व लगभग 20 प्रतिशत अधिकारी भ्रष्ट होते थे, जबकि अब यह प्रतिशत 80-90 प्रतिशत से भी अधिक हो गया है। पहले भ्रष्ट व्यक्तियों की गिनती उंगलियों पर की जा सकती थी। अब ईमानदार अधिकारियों की गणना उंगलियों पर की जा सकती है। सिविल सेवाओं का यह पतन, भारत जैसे विकासशील और कल्याणकारी राज्य के लिए अत्यंत ही हानिकारक सिद्ध हो रहा है।

जब कभी सिविल सेवा में प्रविष्ट नए अधिकारियों से बात करने का अवसर मिलता है तो उनका यह कहना होता है कि आई आई टी, आई आई एम से उत्तीर्ण या सी ए, उनके साथी देश-विदेश में उनसे कई गुना अधिक वेतन पर कार्यरत हैं, तो उन्हें इतना कमाने की छूट क्यों नहीं होनी चाहिए? यह एक विचित्र सा तर्क है। किसी भी व्यक्ति को जबरदस्ती किसी सिविल सेवा के लिए आमंत्रित नहीं किया जाता। अपितु वे पूरी तैयारी के साथ, लाखों व्यक्तियों से प्रतियोगिता के बाद इसमें चयनित होते हैं। उन्हें पहले ही पता होता है कि सिविल सेवा का उद्देश्य, सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का कार्यान्वयन करके आमजन के जीवन को बेहतर बनाना है। साथ ही देश को विकास के पद पर तेजी से आगे बढ़ाने का है । जिनके मन में यह सेवा भाव नहीं हो, उन्हें सिविल सेवा में आने का विचार भी अपने मन में नहीं लाना चाहिए। सिविल सेवा में आने के इच्छुक सभी युवाओं से मेरा अनुरोध है कि जब आप किसी जरूरतमंद वर्ग की सहायता के लिए, संवेदनशीलता और जनहित के काम करने के लिए आकांक्षी हों, तभी सिविल सेवा में आने का प्रयास करें ।

यदि अधिकारी, राजनीतिक दबाव से मुक्त होकर, निष्पक्ष रूप से संवेदनशीलता और ईमानदारी के साथ जनहित में काम करेंगे तो उन्हें जनता का पूरा समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त होगा। यही आशीर्वाद, उनके जीवन भर की पूंजी बनी रहेगी जो उनके लिए मानसिक संतोष और प्रसन्नता का का कारण भी बनेगा। अब, अधिकारियों को तय करना है कि वे दुनिया में बदनाम, भ्रष्ट के रूप में अपना नाम करें या एक जनहितकारी ईमानदार, संवेदनशील अधिकारी के रूप में अपनी छवि को बनाएं। यदि वे ऐसा कर पाए तो वह सरदार पटेल की कल्पना वाली सिविल सर्विस की अवधारणा को साकार कर पाएंगे और इसकी खोई हुई भी प्रतिष्ठा को पुन: भी अर्जित करने में सहायक सिद्ध होंगे ।

अंत में यही कह सकते हैं कि अधिकारी तब ही ईमानदार रहेंगे जब वे मानसिक संतोष को लोभ से ऊपर रखेंगे, उनके परिजन आय के अनुसार रहना सीखें और तथाकथित मलाईदार पोस्टिंग के मोह में नहीं रहें तथा भ्रष्ट के विरुद्ध तत्काल कठोरतम कार्यवाही हो। जवाबदेही निर्धारण के बिना भ्रष्टाचार पर अंकुश संभव नहीं है।

**-अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# पंचतत्वों की साधना : राजस्थान का पारंपरिक हस्तशिल्प यथा विहंगम : आकाशे तथा कला मनसि स्थिता



**अब्दुल लतीफ उस्ता**

दस्तकार अपनी पीढ़ियों से चली आ रही विरासत को सहेजते हुए मिट्टी, धातु, लकड़ी और कपड़ों में संस्कृति की जो जीवंत भाषा उकेरते हैं, वह बौद्धिक ज्ञान और संवेदनशीलता का अनूठा संगम है। उनकी यह सृजनात्मकता केवल एक पेशा नहीं, बल्कि सदियों पुराने इतिहास और मानवीय भावों का जीवंत दस्तावेज है। अनजाने में ही सही, उनकी कला यात्रा कई बार स्थापित शास्त्रीय परंपराओं के ऐसे जीवंत आयाम छू लेती है, जहाँ अकादमिक नियमों की सीमाएँ पीछे छूट जाती हैं। उनकी सहज कलात्मक दृष्टि लोक-कला और तथाकथित उच्च कला की खाई को पाट देते हैं।

कला-इतिहासकार और मनीषी डॉ. आनंद कुमारस्वामी अपनी किताब "ऊप ध्र्ंह ऐूर्स्ह" में लिखते हैं कि भारतीय शिल्पकार केवल भौतिक निर्माण नहीं, बल्कि ध्यान-मंत्र के जरिए एक आध्यात्मिक साधना करता है। वह ध्यान में साक्षात दैवीय स्वरूप को ही मिट्टी या धातु के माध्यम से मूर्त रूप देता है। हमारी कला का मूल उद्देश्य बाहरी सौंदर्य गढ़ना नहीं, बल्कि पदार्थ के भीतर छिपे आंतरिक सत्य और चेतना को जाग्रत करना है।

भारतीय सन्दर्भों में दस्तकार की कला केवल हाथों का हुनर ही नहीं, बल्कि प्रकृति के पांच मूल तत्वों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का सुन्दर संयोजन है। जब वह मिट्टी, रंगों, सुखाने, तपाने और ढलने जैसी प्रक्रिया से कला को आकार देता है, तो वह उसे केवल मूर्त रूप नहीं दे रहा, बल्कि ब्रह्मांड के इन्हीं पाँच तत्वों को अपनी साधना से जीवंत कर रहा है। भारत की अन्य हस्तशिल्प परंपरा की भांत, राजस्थान की यह परंपरा भी प्रकृति से गहरे जुड़ी हुई हैं। हमारी शिल्प परंपराएं केवल सजावटी अभिव्यक्ति या व्यावसायिक उत्पाद नहीं, बल्कि रेगिस्तान, लोकविश्वास, सामुदायिक जीवन, ऋतुओं और रोजमर्रा के अनुभवों से बनी एक मजबूत परंपरा एवं जीवंत संस्कृति है।

मोलेला की टेराकोटा कला, ब्लू पॉटरी, रंग-बिरंगी बंधेज, अजरख, बगरू और सांगानेरी ठप्पा छपाई, पारंपरिक मिट्टी के बर्तन, स्वर्ण-नक्काशी से सजी मीनाकारी, उस्ता कला तथा कठपुतलियां आदि हस्तशिल्पों में राजस्थान की अनूठी भौगोलिक और सांस्कृतिक पहचान झलकती है। इन हस्तशिल्प परंपराओं को पंचमहाभूतों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश- के माध्यम से समझना इसलिए जरूरी है। क्योंकि ये पांचों तत्व किसी भी शिल्प के सामग्री, निर्माण, उसकी तकनीक और उसके मूल अस्तित्व का बुनियादी तत्व हैं। राजस्थान में भी प्रकृति कोई अलग या बाहरी विषय नहीं है; वह दस्तकार के जीवन, उसकी आस्था और उसकी कला के भीतर रची-बसी है।

राजस्थान के हस्तशिल्पों में पृथ्वी का सबसे सीधा और जीवंत रूप मिट्टी, धातुओं और प्राकृतिक खनिजों के माध्यम से दिखाई देता है। मरुस्थलीय धरातल और यहां की खदानें हस्तशिल्पियों को ऐसा कच्चा माल देती हैं जो सीधे तौर पर स्थानीय संस्कृति से जुड़ा होता है। राजसमंद जिले के मोलेला गांव की टेराकोटा कला इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जहां नदी-किनारे की विशेष चिकनी मिट्टी से देवी-देवताओं और ग्रामीण जीवन के दृश्य बनाए जाते हैं, और कलाकार बिना साँचों के अपनी उंगलियों व वर्षों के अनुभव से समुदाय की सामाजिक स्मृति को सुरक्षित रखता है। इसके अलावा मीनाकारी, कोफ्तकारी और उस्ता कला में प्रयोग होने वाली सोना एवं चाँदी तथा फड़, पिछवाई, पारंपरिक चित्रों व वस्त्र छपाई में इस्तेमाल होने वाले गेरू, पेवडी, हिंगलू व अन्य कई खनिज रंग सीधे पृथ्वी की गोद से आते हैं, जो हस्तशिल्प और प्रकृति के उस अटूट रिश्ते को दर्शाते हैं जहां आवश्यक सामग्री भी पर्यावरण से ही प्राप्त होती है।

राजस्थान जैसे जल-अभाव वाले प्रदेश में पानी का महत्व केवल प्यास बुझाने तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, आजीविका और हस्तशिल्प के सृजन का भी मूल आधार है। जल के बिना किसी भी रंगाई, छपाई या टेराकोटा शिल्प की कल्पना तक नहीं की जा सकती। मिट्टी को गूंथने से लेकर, लेई तैयार करने, रंगों को घोलने और मिट्टी के बर्तनों को आकार देने के लिए पानी की निरंतर आवश्यकता होती है। बगरू, सांगानेरी, अजरख छपाई का पूरा उद्योग जल प्रबंधन और स्थानीय पर्यावरणीय ज्ञान पर टिका है, जहां कपड़े को प्राकृतिक रंगों में रंगने से पहले उसे पानी में बार-बार भिगोया, धोया और सुखाया जाता है ताकि कपड़ा रंग को भली-भांति सोख सके।

रंगाई की यह पूरी प्रक्रिया इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान के हस्तशिल्पी पानी की एक-एक बूंद के महत्व को समझते हुए अपने हुनर को संवारते रहे हैं, और जल यहां केवल एक तरल पदार्थ नहीं बल्कि रंगों को जीवन देने वाला अमृत है। इसी जल-संस्कृति में हर एक रंग के पीछे पानी की वह साधना छिपी होती है जो धरातल पर जीवन और कला के बीच समन्वय गढ़ती है।

अग्नि राजस्थान के हस्तशिल्पों में निर्माण, परिपक्वता और रूपांतरण की सबसे बड़ी शक्ति है, क्योंकि कच्ची मिट्टी, धातुओं और कच्चे रूपों को स्थायित्व प्रदान करने का काम केवल आग ही करती है। हाथ से गढ़ी गई मोलेला के टेराकोटा प्लाक्स और मिट्टी के बर्तन भट्ठी की तेज और नियंत्रित आग में पकने के बाद ही टिकाऊ बनते हैं। जयपुर की विश्व प्रसिद्ध ब्लू पॉटरी, बीकानेर का कट-ग्लास कला में क्वार्ट्ज और कांच के मिश्रण को विशेष तापमान पर पकाया जाता है, और मीनाकारी तथा आभूषण कला में धातुओं पर चढ़ाई गई रंगीन कांच की परतों को स्थायी बनाने के लिए भी अग्नि के ताप का ही प्रयोग किया जाता है, जहां आग का तापमान थोड़ा भी असंतुलित हो जाए तो रंग और चमक बिगड़ सकती है। इसके अतिरिक्त, अग्नि राजस्थान की संस्कृति में केवल शिल्प भट्ठियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैवाहिक अनुष्ठानों, यज्ञों, दीपकों और लोकउत्सवों के माध्यम से पवित्रता, ऊर्जा और सामुदायिक एकता का शाश्वत प्रतीक भी है जो हस्तशिल्पी के भीतर की रचनात्मक ऊर्जा को निरंतर प्रज्वलित रखती है।

वायु का सीधा संबंध हस्तकला के उपकरणों, शिल्पकारों की शारीरिक गति और पारंपरिक प्रदर्शनकारी कलाओं से जुड़ा है, और यद्यपि वायु अदृश्य है, किंतु हस्तशिल्प के निर्माण में उसकी उपस्थिति को साफ महसूस किया जा सकता है। हमारी कठपुतलियां बिना वायु और गति के अर्थहीन हैं, जिन्हें कुशल कारीगर लकड़ी को तराशकर और रंग-बिरंगे कपड़ों से सजाकर तैयार करता है, और उनमें गति संचार करने का काम कलाकार की उंगलियों की हवा जैसी फुर्ती और लय करती है। लोकशिल्प के अंतर्गत बनने वाले पारंपरिक वाद्ययंत्र-जैसे सारंगी, कमायचा, अलगोजा और मोरचंग- वायु और सांस के कंपन से ही स्वर-लहरी पैदा करते हैं। जब बगरू, सांगानेरी या अजरख प्रिंट के थानों को खुले आसमान के नीचे हवा में सूखने के लिए फैलाया जाता है, तो बहती हुई हवा प्राकृतिक रंगों और कपड़ों को अंतिम रूप से सुखाकर स्थिर करती है।

आकाश को यदि रूपक के रूप में हस्तशिल्पों के सन्दर्भ में खुले विस्तार, असीम कल्पना, संतुलन और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक कहा जाये तो गलत नहीं होगा। राजस्थान की प्रसिद्ध बंधेज और लहरिया कला में कपड़े को छोटे-छोटे बिंदुओं से बांधकर रंगा जाता है, और जब कपड़ा खुलता है, तो उसमें अनगिनत ज्यामितीय आकृतियां और लहरें बनती हैं जो किसी खुले आसमान के नीचे फैली रेत की लहरों या तारों भरे आकाश का भ्रम पैदा करती हैं। हस्तशिल्प और लोकचित्रों में उपयोग होने वाले वृत्त, त्रिकोण, चौकोर और सममितीय पैटर्न केवल सजावटी रेखाएं नहीं हैं, बल्कि वे ब्रह्मांडीय संतुलन, दिशा और उस सांस्कृतिक आकाश को दर्शाते हैं जिसके तले समुदाय पनपते हैं।

सार-रूप में राजस्थान की लोककलाएँ, विशेषकर हस्तशिल्प में पंचमहाभूत प्रकृति और संस्कृति के बीच संबंध को समझने का माध्यम हैं। पृथ्वी मिट्टी और स्मृति बनकर उभरती है, जल जीवन और आशा बनकर, अग्नि शिल्प और अनुष्ठान बनकर, वायु लय और स्वर बनकर तथा आकाश लोककथा और कल्पना बनकर प्रकट होता है। इस दृष्टि से राजस्थान के हस्तशिल्प केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि आज भी जीवित संस्कृति है, जो मनुष्य और प्रकृति के बीच संवाद से पैदा होती है। जब तक कलाकार-समुदाय अपनी मिट्टी, अपने गीत, अपने रंग और अपनी कथाओं से जुड़े रहेंगे, तब तक उनकी कला न केवल संरक्षित रहेगी, बल्कि वह निरंतर नए रूपों में जीवित और प्रासंगिक बनी रहेगी।

**–अब्दुल लतीफ़ उस्ता,**
**विरासत विशेषज्ञ और कला इतिहासकार**

# भजनलाल सरकार ने उदयपुर शहर में पेयजल, चिकित्सा व पर्यटन विकास और पर्यावरण संरक्षण के संबंध में ऐतिहासिक कदम उठाए हैं



**गौरीकांत शर्मा**

उदयपुर की दीर्घकालीन पेयजल सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में देवास परियोजना राजस्थान की महत्वपूर्ण अंतर-बेसिन जल हस्तांतरण परियोजनाओं में से एक है। देवास परियोजना के तृतीय एवं चतुर्थ चरण के लंबित कार्यों को राज्य सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता पर रखते हुए तेजी से आगे बढ़ाया है। देवास परियोजना साबरमती बेसिन क्षेत्र के जल को जो व्यर्थ बहकर अरब सागर में बह जाता है, को बनास बेसिन की ओर हस्तान्तरण का अभिनव प्रयोग कर उदयपुर की जल व्यवस्था से जोड़ने की परिकल्पना का मूर्त रूप है। देवास-प्रथम से शुरू हुई इस यात्रा में वर्ष 1974 में प्रथम चरण के माध्यम से उदयपुर की पेयजल व्यवस्था को आधार मिला।

इसके बाद देवास-द्वितीय वर्ष 2015 में पूर्ण हुआ, जिसके अंतर्गत आकोदड़ा बांध एवं सुरंग प्रणाली के माध्यम से गुरूत्व प्रभाव द्वारा जल को उदयपुर की पिछोला झील तक पहुंचाने की व्यवस्था विकसित हुई। देवास-तृतीय एवं देवास-चतुर्थ इसी दीर्घकालीन जल सुरक्षा की अगली महत्वपूर्ण कड़ी हैं। परियोजना पूर्ण होने पर उदयपुर शहर के लिए प्रतिवर्ष लगभग 1000 एमसीएफटी अतिरिक्त जल उपलब्ध कराया जाएगा। इससे शहर की बढ़ती पेयजल आवश्यकता को पूरा करने के साथ पिछोला एवं फतहसागर झीलों में जल स्तर बनाए रखने में भी सहायता मिलेगी।

देवास-चतुर्थ परियोजना के अंतर्गत गोगुंदा तहसील के अंबावा गांव के पास 390 एमसीएफटी क्षमता के बांध तथा 4.15 किलोमीटर लंबी टनल का निर्माण किया जा रहा है। यहां से जल का अपवर्तन देवास-तृतीय परियोजना की ओर किया जाएगा। इसी प्रकार नाथियाथल गांव के पास 703 एमसीएफटी क्षमता के देवास-तृतीय बांध का निर्माण किया जा रहा है। देवास-तृतीय बांध से जल को 10.50 किलोमीटर लंबी टनल के माध्यम से मौजूदा देवास-द्वितीय (आकोदड़ा बांध) तक तत्पश्चात् आवश्यकता अनुसार उदयपुर की पिछोला झील में अपवर्तित किया जाएगा। देवास परियोजना का प्रभाव केवल पेयजल व्यवस्था तक सीमित नहीं रहेगा। उदयपुर की झीलों में बेहतर जल उपलब्धता से पर्यटन गतिविधियों, ईको टूरिज्म तथा होटल एवं पर्यटन क्षेत्र से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों को संबल मिलेगा।

साथ ही जल की दीर्घकालीन उपलब्धता से स्थानीय उद्योगों तथा भविष्य में होने वाले निवेश के लिए भी अनुकूल वातावरण तैयार होगा। परियोजना से पर्यटन, पर्यावरण एवं जलीय पारिस्थितिकी के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान होगा।

नई कॉलोनियों तक पहुंचा पेयजल नेटवर्क-शहर और तेजी से विकसित हो रही विस्तारित कॉलोनियों में शुद्ध पेयजल की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए लगभग 17.90 करोड़ रूपए की लागत से पेयजल पाइपलाइन नेटवर्क बिछाने का कार्य किया गया है। इससे नए विकसित क्षेत्रों को भी शहर की पेयजल व्यवस्था से जोड़ा जा रहा है।

100 करोड़ से मजबूत होगी बिजली व्यवस्था-बढ़ते शहरी विस्तार के साथ बिजली की मांग में भी लगातार वृद्धि हो रही है। बिजली ट्रिपिंग और लोड की समस्या से निजात दिलाने के लिए शहर में 100 करोड़ रूपए की लागत से 33 केवी के 20 नए जीएसएस स्थापित किए जा रहे हैं। इस दिशा में प्रथम चरण के तहत उदयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जमीन आवंटन की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है और 5 नए जीएसएस का कार्य अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड के माध्यम से शुरू करवाया गया है।

देवास परियोजना से जल सुरक्षा, पाइपलाइन विस्तार से पेयजल पहुंच और नए जीएसएस से विद्युत आपूर्ति को मजबूती देने के यह प्रयास उदयपुर के दीर्घकालिक विकास की आधारशिला तैयार कर रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण के बीच जल और बिजली जैसी बुनियादी जरूरतों का मजबूत नेटवर्क शहर के सतत विकास के लिए अहम साबित होगा। विकास के साथ प्रकृति और पर्यटन को नया आयाम रामगिरी ऑक्सीजन हब से नेहरू गार्डन तक, उदयपुर की खूबसूरती में जुड़ रहे नए रंग।

शहर के पर्यावरण को बेहतर बनाने और हरित क्षेत्र बढ़ाने के लिए रामगिरी पहाड़ी को 20.05 करोड़ रूपए की लागत से विशाल ऑक्सीजन हब के रूप में विकसित किया जा रहा है। यह परियोजना शहर में हरियाली बढ़ाने के साथ पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। विकसित होने के बाद यह क्षेत्र शहरवासियों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का नया केंद्र भी बनेगा।

लॉयन सफारी और रेप्टाइल पार्क-मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत उदयपुर के सज्जनगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य में प्रदेश की दूसरी लॉयन सफारी स्थापित की गई है। इसके लिए गुजरात के प्रसिद्ध गिर अभ्यारण्य से एशियाई शेरों का जोड़ा लाया गया है। सज्जनगढ़ वन्यजीव अभ्यारण्य क्षेत्र में ही लॉयन सफारी के लिए पृथक से एनक्लोजर तैयार किए गए हैं। इसके अलावा सज्जनगढ़ बायोलॉजिकल पार्क में ही रेप्टाइल पार्क भी तैयार किया गया है। इसमें विभिन्न प्रजाति के सरीसर्प जीवों को रखा गया है, जो पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

पर्यटन को लग रहे पंख-मुख्यमंत्री बजट घोषणा के तहत 100 करोड रूपए की लागत से महाराणा प्रताप ट्यूरिस्ट सर्किट तैयार किया जा रहा है। इसके अलावा फतहसागर झील के मध्य स्थित ऐतिहासिक नेहरू गार्डन के सौंदर्गीकरण पर भी विशेष ध्यान दिया गया है। करीब 10 करोड़ रूपए की लागत से नेहरू गार्डन को नया स्वरूप दिया गया है। इसके अलावा शहर में पंच गौरव पार्क और पंच गौरव चौराहे का निर्माण भी प्रगतिरत है। इन परियोजनाओं के माध्यम से शहर के प्रमुख स्थानों के सौंदर्याकरण के साथ स्थानीय पहचान और गौरव को भी प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है।



**नंदिनी भार्गव**

महिला स्वास्थ्य सेवाओं को मिलेगा अत्याधुनिक आधार-आरएनटी मेडिकल कॉलेज परिसर स्थित पन्नाधाय राजकीय महिला चिकित्सालय की जर्जर हो चुकी पुरानी बिल्डिंग के स्थान पर एक भव्य और अत्याधुनिक नया भवन बनाने के लिए 120 करोड़ रूपए का बजट आवंटित किया गया है। प्रस्तावित बहुमंजिला नए भवन में आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के साथ पर्याप्त बेड्स की व्यवस्था विकसित की जाएगी। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के लिए प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृतियां जारी की जा चुकी हैं। परियोजना की लागत का 50 प्रतिशत हिस्सा डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन ट्रस्ट और 50 प्रतिशत उदयपुर विकास प्राधिकरण फंड से वहन किया जा रहा है।

**–गौरीकांत शर्मा,**
**उपनिदेशक, उदयपुर एवं नंदिनी भार्गव, इंर्टन डीआईपीआर में कार्यरत है।**

## राशिफल मंगलवार 3 नवम्बर, 2026



**पंडित अनिल शर्मा**

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत-2083, मघा नक्षत्र रात्रि 3:27 तक, शुक्ल योग प्रात: 9:54 तक, गर करण दिन 11:55 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति-** सूर्य-तुला, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

कुमार योग दिन 11:55 से रात्रि 3:27 तक है। भद्रा रात्रि 11:29 से आरम्भ होगी।

**श्रेष्ठ चौघड़िया-** चर 9:26 से 10:48 तक, लाभ-अमृत 10:48 से 1:32 तक, शुभ 2:55 से 4:17 तक।

**राहुकाल-** 3:00 से 4:30 तक, सूर्योदय 6:41, सूर्यास्त 5:39



**मेष**
व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त कार्य करना पड़ सकता है। घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।



**सिंह**
मानसिक तनाव दूर होगा। मन: स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।